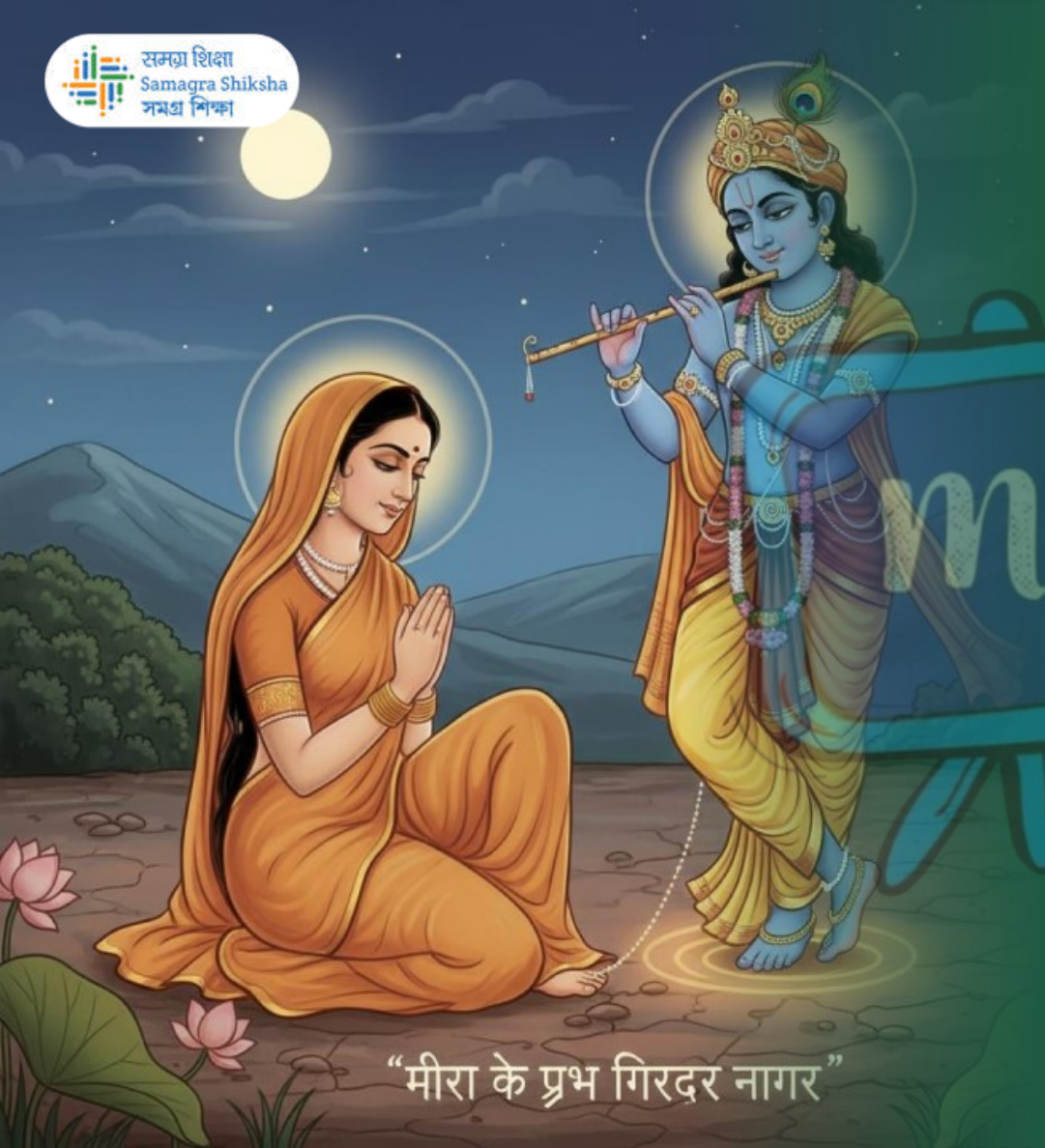

कक्षा - 10

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 8

पद-त्रय

(मीराँबाई ((1498-1546))

भाग – 1

पल्लवी कलिता

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



मीराँबाई

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

कवि परिचय

मीराँबाई (1498-1546)

जन्म – सन् 1498 के आस-पास प्राचीन राजपूताने के अंतर्गत 'मेड़ता' प्रांत के 'कुड़की' नामक स्थान में राठौड़ वंश की मेड़तिया शाखा में हुआ था।

- बचपन में ही माता के निधन होने और पिता राव रत्न सिंह के भी युद्धों में व्यस्त रहने के कारण बालिका मीराँबाई का लालन-पालन उनके दादा राव दूदाजी की देखरेख में हुआ।

कृष्णभक्ति – हिंदी की कृष्ण-भक्ति काव्य धारा में कवयित्री मीराँबाई को महाकवि सूरदास जी के बाद ही स्थान प्राप्त है, जबकि हिन्दी कवयित्रियों में उनका स्थान अग्रणी हैं ।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

परम कृष्ण-भक्त दादाजी के साथ रहते-रहते बालिका मीराँ के कोमल हृदय में कृष्ण-भक्ति का बीज अंकुरित होकर बढ़ने लगा। आगे आपने कृष्ण जी को ही अपना आराध्य प्रभु एवं पति मान लिया।

विवाह – सन् 1516 में मेवाड़ के महाराजा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र कुँवर भोजराज के साथ मीराँबाई का विवाह हुआ।

- दुर्भाग्यवश विवाह के सात वर्ष बाद ही भोजराज जी का स्वर्गवास हो गया। राजपूतों की तत्कालीन परंपरा का विरोध करते हुए क्रांतिकारिणी मीराँ सती नहीं हुईं। वे जग सुहाग को मिथ्या और अविनाशी प्रभु कृष्ण जी को सत्य मानती थीं।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

रचनाएँ - कवयित्री मीराँबाई की रचनाओं में प्रामाणिकता की दृष्टि से कृष्ण-भक्तिपरक लगभग दो सौ फुटकर पद ही विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। ये फुटकर पद 'मीराँबाई की पदावली' नाम से प्रसिद्ध हैं। ये पद कवयित्री मीराँबाई के कृष्ण भक्तिमय हृदय के स्वतः उद्‌गार हैं।

भाषा – उन्होंने मुख्य रूप से हिंदी की उपभाषा राजस्थानी में काव्य रचना की है, परंतु उसमें ब्रज, खड़ी बोली, पंजाबी, गुजराती आदि के भी शब्द मिल जाते हैं।

मृत्यु – प्रसिद्ध है कि द्वारकाधाम के श्री रणछोड़ जी के मंदिर में अपने प्रभु गिरिधर गोपाल का भजन-कीर्तन करते-करते सन् 1546 के आसपास वे भगवान की मूर्ति में सदा के लिए विलीन हो गयीं।

(1)

मैं तो चरण लगी गोपाल।

जब लागी तब कोऊँ न जाने, अब जानी संसार।

किरपा कीजै, दरसन दीजै, सुध लीजै तत्काल ।

मीराँ कहै प्रभु गिरधर नागर चरण-कमल बलिहार।।

चरण लगी	:	চৰণত শৰণ লোৱা
गोपाल	:	গো-পালক শ্ৰীকৃষ্ণ
किरपा	:	কৃপা
सुध	:	খবৰ লোৱা
गिरधर	:	গোৱৰ্ধন পৰ্বত ধাৰণ কৰা শ্ৰীকৃষ্ণ
कोऊँ	:	কোনোৱে
बलिहार	:	সমৰ্পন কৰা

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

अर्थ

मीराँ कहती है कि वह तो बचपन से ही श्रीकृष्ण के चरणों में लगी हुई हैं। उस समय उनके प्रेम और भक्ति को कोई नहीं समझ पाया, लेकिन अब पूरा संसार जानता है। मीराँ प्रभु से विनती करती हैं कि वे उन पर कृपा करें, दर्शन दें और तुरंत उनकी सुध लें। अंत में वह कहती हैं कि वह अपने प्रिय गिरधर नागर के चरण-कमलों में अपने को न्योछावर कर चुकी हैं ।

(2)

म्हारे घर आवौ सुंदर श्याम ।

तुम आया बिन सुध नहीं मेरो, पीरी परी जैसे पाण।

म्हारे आसा और ण स्वामी, एक तिहारो ध्याण।

मीराँ के प्रभु वेग मिलो अब, राषो जी मेरो माण ।।

म्हारे	: আমাৰ	ण	: নহয়
बिन	: অবিহনে	तिहारो	: তোমাৰ
सुध	: চেতনা	वेग	: শীঘ্রে
पीरी	: হালধীয়া	राषो	: ৰক্ষা কৰা
आसा	: আশা	माण	: সন্মান

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

अर्थ

मीराँ अपने सुंदर श्याम (श्रीकृष्ण) को घर आमंत्रित करते हुए कहती हैं कि आपके बिना मुझे कोई सुध-बुध नहीं हैं। उनके (कृष्ण) विरह में मीराँ पके पाण की तरह पीली पड़ गयी हैं। मीराँ के मन में कोई और आशा या स्वामी नहीं, बस कृष्ण का ही ध्यान है। मीराँ कहती है कि हे मेरे प्रभु, अब जल्दी आकर मिलिए और मेरे मान की रक्षा कीजिए।

(3)

राम नाम रस पीजै मनुआँ, राम नाम रस पीजै ।
तज कुसंग सतसंग बैठ णित हरि चरचा सुण लीजै।
काम क्रोध मद लोभ मोह कूँ, बहा चित्त सूँ दीजै ।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, ताहि के रंग में भीजै ।।

पीजै	:	পিয়া	सुण	:	শুনা
मनुआँ	:	মানুহ	बहा..... दीजै	:	হৃদয়ৰ
तज	:	ত্যাগ			পৰা দূৰ কৰি দিয়া
कुसंग	:	বেয়া সংগ	रंग .....भीजै	:	প্রভু কৃষ্ণৰ
णित	:	সদায়			ৰংগ ৰসেৰে তিতি যোৱা

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

अर्थ

मनुष्य को चाहिए कि वह भगवान के नाम का रस पीकर (निरंतर स्मरण करके) बुरी संगति छोड़कर भक्ति-सत्संग में जुड़े, मन से विकारों को निकाल दे और राम (कृष्ण) के प्रेम, भक्ति और रंग में रंग जाए। यही जीवन की सच्ची साधना और आनंद है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

बोध एवं विचार —

1. 'हाँ' या 'नहीं' में उत्तर दो —

(क) हिंदी की कृष्ण-भक्ति काव्य-धारा में कवयित्री मीराँबाई का स्थान सर्वोपरि है।

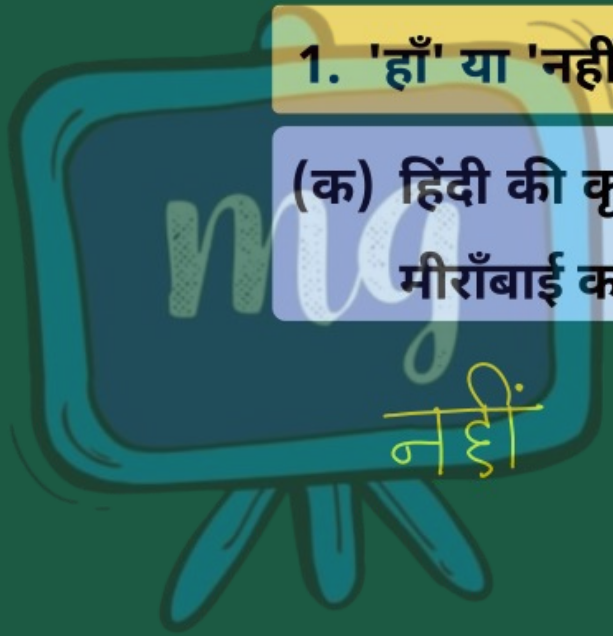

(ख) कवयित्री मीराँबाई भगवान श्रीकृष्ण की अनन्य आराधिका थीं।



(ग) राजपूतों की तत्कालीन परंपरा का विरोध करते हुए क्रांतिकारिणी मीराँ सती नहीं हुई।



(घ) मीराँबाई अपने को श्री कृष्ण जी के चरण कमलों में पूरी तरह समर्पित नहीं कर पायी थीं।



(ड.) मीराँबाई ने सुंदर श्याम जी को अपने घर आने का आमंत्रण दिया है।



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

2. पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

(क) कवयित्री मीराँबाई का जन्म कहाँ हुआ था ?



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

2. पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

(क) कवयित्री मीराँबाई का जन्म कहाँ हुआ था ?

उत्तरः कवयित्री मीराँबाई का जन्म प्राचीन राजपूताने के अंतर्गत 'मेड़ता' प्रांत के कुड़की नामक स्थान में हुआ था।

(ख) भक्त-कवयित्री मीराँबाई को कौन-सी आख्या मिली है?



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ख) भक्त-कवयित्री मीराँबाई को कौन-सी आख्या मिली है?

उत्तर : भक्त-कवयित्री मीराँबाई को कृष्ण-प्रेम दीवानी की आख्या मिली है।

(ग) मीराँबाई के कृष्ण भक्तिपरक फुटकर पद किस नाम से प्रसिद्ध हैं ?



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ग) मीराँबाई के कृष्ण भक्तिपरक फुटकर पद किस नाम से प्रसिद्ध हैं ?



उत्तर : मीराँबाई के कृष्ण भक्तिपरक फुटकर पद 'मीराँबाई की पदावली' नाम से प्रसिद्ध है।

(घ) मीराँबाई के पिता कौन थे ?



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(घ) मीराँबाई के पिता कौन थे ?

उत्तर : राव रत्नसिंह मीराँबाई के पिता थे।



(ङ) कवयित्री मीराँबाई ने मनुष्यों से किस नाम का रस पीने का आह्वान किया है?



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ङ) कवयित्री मीराँबाई ने मनुष्यों से किस नाम का रस पीने का आह्वान किया है?

उत्तर : कवयित्री मीराँबाई ने मनुष्यों से राम नाम रस पीने का आह्वान किया है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

3. अति संक्षिप्त उत्तर दोः

(क) मीराँ भजनों की लोकप्रियता पर प्रकाश डालो?



3. अति संक्षिप्त उत्तर दोः

(क) मीराँ भजनों की लोकप्रियता पर प्रकाश डालो।

उत्तर : हिन्दी की कृष्ण – भक्ति काव्य धारा में कवयित्री मीराँबाई का स्थान महाकवि सूरदास जी के बाद ही है। उनके द्वारा विरचित गीत-पदों में कृष्ण-भक्ति भावना और कृष्ण प्रेम-रस अत्यन्त सहज और सुबोध भाषा में अभिव्यक्त है। उनके भजन कबीर ,सूरदास और तुलसीदास के भजनों के समकक्ष थे ।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

उन भजनों को आज भी श्रद्धा सहित गाए जाते हैं। इसी से उनके भजनों की लोकप्रियता का पता चलता हैं ।



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ख) मीराँबाई का बचपन किस प्रकार बीता था?



(ख) मीराँबाई का बचपन किस प्रकार बीता था?

उत्तर : मीराँबाई का बचपन उनके दादा राव दूदाजी की देखरेख में बीता था। क्योंकि बचपन में ही मीराँबाई की माता का निधन हुआ था और पिता राव रत्नसिंह भी युद्धों में व्यस्त थे । कृष्णभक्त दादा राव दूदाजी के साथ रहते - रहते बालिका मीराँ भी अपने हृदय में कृष्ण भजन करने लगीं थी।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ग) मीराँबाई का देहावसान किस प्रकार हुआ था?



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ग) मीराँबाई का देहावसान किस प्रकार हुआ था?

उत्तर : कवयित्री मीराँबाई के पति भोजराज जी का स्वर्गवास हो जाने के बाद उस समय के प्रचलित परंपरा का विरोध करती हुई मीराँ सती नहीं हुई । प्रसिद्ध है कि वे प्रभु गिरिधर नागर की खोज में राजप्रासाद से निकल पड़ी और द्वारकाधाम के श्री रणछोड़ जी के मंदिर में अपने आराध्य पति कृष्ण का भजन करते-करते भगवान की मूर्ति में सदा के लिए विलीन हो गयीं।

(घ) कवयित्री मीराँबाई की काव्यभाषा पर प्रकाश डालो।



(घ) कवयित्री मीराँबाई की काव्यभाषा पर प्रकाश डालो।

उत्तर : मीराँबाई ने हिन्दी की उपभाषा राजस्थानी में काव्य रचना की है। इसमें ब्रज, खड़ीबोली ,पंजाबी , गुजराती आदि के भी शब्द मिल जाते हैं । काव्यभाषा की सांगीतिक लय के कारण उनके भजन गीत सबके प्रिय रहे हैं और रहेगी।